ISSN 2278-8808 SJIF 2015: 5.403
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

शासकीय एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रतिबद्धता का तुलनात्मक अध्ययन

विवेक नाथ त्रिपाठी

सहायक आचार्य शिक्षा विभाग हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला-

Abstract

प्रस्तुत शोध पत्र में शासकीय एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रतिबद्धता का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। जिसमे शोध के न्यादर्श का चुनाव उद्देश्यपूर्ण विधि द्वारा किया गया। न्यादर्श के रूप में ६० शिक्षकों को लिया गया है। जिसमें ३० शासकीय तथा ३० अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षक है। शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया आंकडों के एकत्रिकण के लिए शोध कर्ता द्वारा स्वयं दो अलग-अलग प्रश्नवाली का निमार्ण किया गया। तथा विश्लेषण के लिए प्रतिशत, काई परीक्षण व दण्ड आरेंख का प्रयोग किया गया है। शोध परिणाम यह बताते है कि लगभग ७५ प्रतिशत शासकीय एवं ८५ प्रतिशत अशासकीय शिक्षकों में शिक्षण के प्रति प्रतिबद्धता पायी गयी ।

Scholarly Research Journal's ***is licensed Based on a work at*** *www.srjis.com*

प्रस्तावना

शिक्षा एक अत्यन्त व्यापक सम्प्रत्य है शिक्षा को मानव जीवन का आधार स्तम्भ भी माना गया है। शिक्षा के आभाव में मानव जीवन के विकास की कल्पना नहीं की जा सकती है ,यह मानव जीवन की उत्कृष्टता एवं उच्चता को सुनिश्चत करती है प्राचीनकाल में शिक्षा को समाज के कार्यों एवं उद्देश्यों के अनुसार आत्मज्ञान एवं आत्म प्रकाश का साधन माना गया है। शिक्षा जड़ नहीं अपितु चेतन तथा स्वेच्छित द्विमुखी प्रक्रिया है। इस दृष्टि से शिक्षण के लिए दो व्यक्तियों का होना परम आवश्यक है- एक शिक्षक तथा दसूरा बालक। शिक्षक के कुछ आदर्श मूल्य तथा विश्वास होते है और बालक इस सबसे प्रभावित होता है। शिक्षक का शिक्षा जगत पर पुर्ण प्रभाव एवं महत्व रहता है शिक्षक ही राष्ट्र को सही रूप प्रदान

करने में पूर्णतः सक्षम होता है। स्वामी विवेकानन्द ने इसी सम्बन्ध में शिक्षकों के लिये कहा है कि –''यदि एक दीप को दसूरे दीप तक प्रकाशमान, लौ पुन्ज पहुँचानी है तो प्रथम दीप को स्वंय जलना होगा।'' अर्थात वही शिक्षक छात्रों को पूर्णतः शिक्षित कर सकता है जो स्वयं पर्णू रूपेण प्रशिक्षित एवं विषय विशेषज्ञ हो। अतः शिक्षक का प्रशिक्षित होना शिक्षण के लिए आधारभूत ढांचा तयैार करने में सक्षम होता है किन्तु शिक्षक शिक्षा में गुणात्मक सुधार का विकास तभी सम्भव है जब हमारे अध्यापक स्वयं में ज्ञान आलोक के पुंज होगें । अतः सुधार हेतु यह आवश्यक हो जाता है, कि शिक्षण व्यवसाय को मनसा, वाचा एंव कर्मणा से अपनाया जाए और इसमें प्रशिक्षण विभाग की नैतिक जिम्मेदारी भी होनी चाहिए तथा उसका साधन सम्पन्न होना भी आवश्यक है लेकिन इससे भी अधिक आवश्यक यह है, कि शिक्षक को अपने कार्य में स्वय दक्ष होना चाहिए। वस्तुतः जब औपचारिक शिक्षा की बात आती है तो शिक्षक की बात तत्काल आ जाती है। इस प्रकार शिक्षक की भूमिका एवं उसमें आ रहे परिवर्तन एवं विकास में भी निरन्तर बदलाव आया है। साथ-साथ उसके महत्व में भी परिवर्तन होता चला आ रहा है। आज जब तकनीकी एव ंवैज्ञानिक प्रविधियों का विस्फोट हो रहा है तो शिक्षक की भूमिका तथा उसमें सुधार का परिमाजर्न करना आवश्यक है। यह विकास गणुात्मक अर्पेक्षित है क्योंकि समाज की गति अत्यन्त तेजी से परिवतिर्त हो रही है, अतः वर्तमान समय में शिक्षक शिक्षा के जीतने ससांधन है। उन पर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। चूंकि समाज में एक तरफ भूमण्डलीकरण व ंबाजारवाद का प्रभाव एवं दबाव जिस गति से बढ़ता जा रहा है उसी प्रकार शिक्षक शिक्षा को व्यवस्थित करना आवश्यक हो गया है। वरन् मांग एव ंपूर्ति में बड़ा अन्तर हो सकता है। चूंकि शिक्षा में तकनीकी व्यवस्था का प्रयोग बढ़ा ही है तो हमें यह भी ध्यान रखना पड़ेगा कि हमारी शिक्षक शिक्षा के सस्ंथान उसी प्रकार के शिक्षक तैयार करें जो त्रासदी की चनुौतियों को स्वीकार कर सकें तथा आगामी समाज को उसकी मानसिकता के अनुसार अध्यापकों को तैयार कर सकें। शिक्षक विद्यालय सगंठन की वह संरचना है जिसमें छात्र, प्रधानाध्यापक कमर्चारी अपनी महत्वपर्णू भूमिका रखते हैं इन सभी के प्रयासों से ही विद्यालय की गतिविधियों को संचालित किया जा सकता है। इनमें अध्यापक का स्थान बहतु ही महत्वपर्णू होता है। इस सम्बन्ध में डॉ० राधाकृष्णन ने कहा है कि ''अध्यापक का समाज में बहतु ही महत्वपर्णू स्थान होता है वह उस धुरी के समान है जो बौद्धिक परम्पराओं तथा तकनीकी क्षमताओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तान्तरित करता है और सभ्यता की ज्योति को प्रज्वलित रखता है।'' सेवापूर्ण अध्यापक शिक्षा की भूमिका महत्वपर्णू है। अध्यापकों में व्यावसायिक प्रतिबद्धता लाने के लिये राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद ने एक दस्तावेज दक्षता आधारित और प्रतिबद्धता उन्मुख गणुवत्ता मूलक विद्यालय शिक्षा हेतु एक

दस्तावेज जारी किया। जिसमें अध्यापक के लिये पांच क्षेत्रों में प्रतिबद्ध होना आवश्यक बताया गया। प्रतिबद्धता को परिभाषित करते हुएएन०सी०टी०ई० ने लिखा है, कि किसी भी कार्य को करने के प्रति समर्पण को हम प्रतिबद्धता कहते हें दसूरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि शिक्षक, शिक्षण कार्य के प्रति जितना अधिक प्रतिबद्ध होगा, उतने ही अधिक प्रभावशाली ढगं से वह कक्षा-कक्ष में प्रदर्शन करेगा। प्रतिबद्धताओं से मुक्त अध्यापक निश्चित रूप से गणुवत्तापूर्ण शिक्षा देने में असफल साबित होंगे चूंकि शिक्षा देश के विकास तथा सामाजिक परिवर्तन का एक प्रमुख कारण है। अतः देश के सही दिशा में विकास तथा समाज का मनोवांच्छित परिवर्तन करने के लिये शिक्षा की गुणवत्तापूर्ण होना अति आवश्यक है और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिये अध्यापक का प्रतिबद्ध होना अति आवश्यक है। सामान्य अर्थ में प्रतिबद्धता को हम किसी भी कार्य के प्रति समर्पण कह सकते हैं। अर्थात् जो व्यक्ति किसी कार्य को करने के प्रति जितना अधिक प्रतिबद्ध होगा वह उस कार्य को उतनी ही अधिक लगन, निष्ठा और समपर्ण भाव से करेगा। अतः प्रत्यके व्यक्ति को अपने कार्य के प्रति प्रतिबद्ध होना चाहिये क्योंकि शिक्षक राष्ट्र का निर्माता होता है। अतः शिक्षक के लिये अपने व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्ध होना न सिर्फ आवश्यक बल्कि अपरिहार्य भी है। अतः हम कह सकते हैं कि प्रतिबद्धता किसी एक के द्वारा किसी दसूरे से किया गया अनुबन्ध है जिसमें कार्यकर्ता एक निश्चित नीति के पालन की प्रतिज्ञा करता है और उस नीति से बंध जाता है। किसी मानवीय प्रयत्न की सफलता इस बात पर निर्भर करती है, कि जो व्यक्ति इसे सचांलित कर रहा है। वह अपने कार्य के प्रति कितना प्रतिबद्ध है। देश के मक्ुत आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास के साथ-साथ शिक्षा एक अत्यावश्यक मदुद्दा है जो कि केवल व्यक्ति में व्यावसायिक और शैक्षिक योग्यता के विकास से प्राप्त किया जा सकता है। जो शिक्षक के द्वारा ही सम्भव है। तेजी से बदलते सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिदृश्य में शिक्षक का यह दायित्व बनता है कि वह शिक्षा को एक प्रसन्नतादायक अनभुव बनाये। शिक्षा के उददे्श्यों को प्राप्त करने के लिये, शिक्षक को स्वयं में एक अन्वेषक होना चाहिये, उसे सदैव नये विचारों की खोज करनी चाहिये, ज्ञान के सम्प्रेषण के लिये नयी-नयी विधाओं की खोज करनी चाहिये सहनशील होना चाहिये और उसे भविष्य दृष्टा होना चाहिये अर्थात् उसे अपने व्यवसाय के प्रति पूर्णतया प्रतिबद्ध होना चाहिये। शिक्षक प्रतिबद्धता को कई रूपों में व्यक्त किया जा सकता है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद ने अध्यापको के लिये प्रतिबद्धता के पांच प्रमुख क्षेत्र बताये हैं जो निम्नलिखित हैं- १. अधिगमकर्ता के प्रति प्रतिबद्धता। २. समाज के प्रति प्रतिबद्धता। ३. अजीविका के प्रति प्रतिबद्धता। ४. आजीविका गत क्रियाकलाप में उत्कृष्टता की प्राप्ति सम्बन्धी प्रतिबद्धता। ५. मूलभूत मल्ूयों के प्रति प्रतिबद्धता। प्रारम्भिक शिक्षा को गुणवत्ता युक्त बनाने के

लिए यह आवश्यक है कि प्राथमिक विद्यालयों में सेवारत प्राथमिक शिक्षक अपने कार्य के प्रति प्रतिबद्ध हों। प्रस्तुत शोध में यह जानने का प्रयास किया जा रहा है, कि क्या प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षक अपने कार्य के प्रति प्रतिबद्ध हैं, तो उनकी प्रतिबद्धता का स्तर क्या है आदि बातों को अध्ययन करने के लिये शोधकर्ता द्वारा उपर्युक्त समस्या का चयन किया गया ।

समस्या कथन **शासकीय एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण प्रतिबद्धता का तुलनात्मक अध्ययन।"**

अध्ययन के उददे्श्य

१. शासकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की शिक्षण प्रतिबद्धता का अध्ययन करना।
२. अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की शिक्षण प्रतिबद्धता का अध्ययन करना।
३. शासकीय तथा अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की शिक्षण प्रतिबद्धता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना शासकीय तथा अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की शिक्षण प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्श प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में ६० शिक्षकों को लिया है। जिसमें ३० शासकीय तथा ३० अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षक है। न्यादर्श का चयन उद्देश्यपरक विधि द्वारा किया गया ।

विश्लेषण एव ंविवेचन निर्धारित किये उददे्श्यों एव ंपरिकल्पनाओं के अनसुार परीक्षण में प्राप्त आँकड़ों का क्रमवार विश्लेषण निम्न प्रकार है। आँकड़ों का विश्लेषण उददे्श्यों के अनुकूल प्रश्नावली में दिये गये प्रत्यके प्रश्न/कथनों के अनुसार किया गया है।

सारणी ४.१

अधिगमकर्ता के प्रति प्रतिबद्धता

शासकीय प्राथमिक विद्यालय				अशासकीय प्राथमिक विद्यालय				
कथन	**हाँ**	**कभी कभी**	**नही**	**हाँ**	**कभी कभी**	**नही**	**योग**	
विद्यार्थियों पर उचित ध्यानं	२८	०२	००	२६	०२	०२	३०	१.५७४
कमजोर विद्यार्थियों पर उचित ध्यान	२८	०२	००	२२	०४	०४	३०	५.२६
ध्यान आकर्षण करने के लिए प्रश्न पछूना	२२	०६	०२	२२	०८	००	३०	२.२८५

छात्रकोष का उपयोग	१८	१२	००	२४	०३	०३	३०	८.६२३
विद्यार्थियों का परीक्षण करना	२०	०६	०४	१८	०६	०३	३०	०.५६१
विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना	१६	०६	०८	१६	०५	०६	३०	१.०६५

शून्य परिकल्पनाः- कथन १- ''सभी विद्यार्थियों पर उचित ध्यान देने के प्रति अवलोकित वितरण तथा स्वतत्रं वितरण परिकल्पना के आधार पर बनाये गये प्रत्यासित वितरण की आवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सारणी ४.१ से स्पष्ट है, कि काई-वर्ग का मान १.५७४ है जो कि सार्थकता स्तर ०.०५ के लिए सारणी मान ५.६६१ से कम है,अतः काई वर्ग का यह मान सार्थक नहीं है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुएयह कहा जा सकता है,कि विद्यार्थियों पर उचित ध्यान दने के सम्बन्ध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शून्य परिकल्पनाः- कथन - ''कमजोर विद्यार्थियों पर उचित ध्यान देना' के प्रति अवलोकित वितरण तथा स्वतत्रं वितरण परिकल्पना के आधार पर बनाये गये प्रत्यासित वितरण सारणी ४.१ से स्पष्ट है,कि काई-वर्ग का मान ५.२६ है जो कि सार्थकता स्तर ०.०५ क लिए सारणी मान ५.६६१ से कम है,अतः काई वर्ग का यह मान सार्थक नहीं है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुएयह कहा जा सकता है,कि कमजोर विद्यार्थियों पर उचित ध्यान दने के सम्बन्ध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शून्य परिकल्पनाः- कथन- ''अध्यापन के दौरान विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षण करने के लिए प्रश्न पूछना'' के प्रति अवलोकित वितरण तथा स्वतंत्र वितरण परिकल्पना के आधार पर बनाये गये प्रत्यासित वितरण की आवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सारणी ४.१ से स्पष्ट है,कि काई-वर्ग का मान २. २८५ है जो कि सार्थकता स्तर ०.०५ के लिए सारणी मान ५.६६१ से कम है, अतः काई वर्ग का यह मान सार्थक नहीं है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुए यह कहा जा सकता है, कि अध्यापन के दौरान विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षण करने के लिए प्रश्न पूछने के सम्बन्ध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शून्य परिकल्पनाः- कथन- ''छात्रकोष का उपयोग विद्यार्थियों के कल्याण के लिए करना'' के प्रति अवलोकित वितरण तथा स्वतंत्र वितरण परिकल्पना के आधार पर बनाये गये प्रत्यासित वितरण की

आवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सारणी ४.१ से स्पष्ट है,कि काई-वर्ग का मान ८.९२३ है जो कि सार्थकता स्तर ०.०५ के लिए सारणी मान ५.९९१ से अधिक है,अतः काई वर्ग का यह मान सार्थक है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करते हुए यह कहा जा सकता है कि छात्रकोष का उपयोग विद्यार्थियों के कल्याण के लिए करने के सम्बन्ध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक के दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर है।

शून्य परिकल्पनाः- कथन- "समय समय पर विद्यार्थियों का परीक्षण करना" के प्रति अवलोकित वितरण तथा स्वतंत्र वितरण परिकल्पना के आधार पर बनाये गये प्रत्यासित वितरण की आवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सारणी ४.१ से स्पष्ट है, कि काई-वर्ग का मान ०.५६१ है जो कि सार्थकता स्तर ०.०५ के लिए सारणी मान ५.९९१ से कम है,अतः काई वर्ग का यह मान सार्थक नहीं है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुएयह कहा जा सकता है, कि समय समय पर विद्यार्थियों का परीक्षण करने के सम्बन्ध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

शून्य परिकल्पनाः- कथन- " प्रतिभावन विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना" के प्रति अवलोकित वितरण तथा स्वतत्रं वितरण परिकल्पना के आधार पर बनाये गये प्रत्यासित वितरण की आवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सारणी ४.१ से स्पष्ट है,कि काई-वर्ग का मान १.०९५ है जो कि सार्थकता स्तर ०.०५ के लिए सारणी मान ५.९९१ से कम है,अतः काई वर्ग का यह मान सार्थक नहीं है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुएयह कहा जा सकता है, कि प्रतिभावन विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के सम्बन्ध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

सारणी ४.२

समाज के प्रति प्रतिबद्धता

शासकीय प्राथमिक विद्यालय				अशासकीय प्राथमिक विद्यालय				
कथन	**हाँ**	**कभी कभी**	**नही**	**हाँ**	**कभी कभी**	**नही**	**योग**	काई-वर्ग
जागरूकता से सम्बन्धी रैली निकालना	१२	१०	०८	१६	०६	०२	३०	५.२३१
नामांकन बढ़ाने हेत ुसमाज में जागरूकता लाने का प्रयास	१८	०६	०८	२२	०५	०३	३०	१.३०६

''साक्षरता से होने वाले लाभ तथा सरकार द्वारा दी जा रही सुविधाओं की जानकारी समाज को देना''	०८	०१४	०८	११	०६	१०	३०	०.३६२
साक्षरता उन्मलून कार्यक्रम में सहयोग प्रदान करना	२०	०२	०८	१४	१२	०४	३०	६.५३२
''समाज के प्रति एक शिक्षक के दायित्वों का निर्वहन	३०	००	००	२६	००	०१	३०	१.०१६
समाज की शिक्षा सम्बन्धी जागरूकता के लिए चलाये गये कार्यक्रमों में भाग लेना	०६	२४	००	१३	१३	०४	३०	६.८४८

शून्य परिकल्पनाः- कथन- ''शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े हुएवर्ग को शिक्षित करने के लिए शिक्षा की जागरूकता से सम्बन्धी रैली निकालना'' के प्रति अवलोकित वितरण तथा स्वतत्रं वितरण परिकल्पना के आधार पर बनाये गये प्रत्यासित वितरण की आवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सारणी ४.२ से स्पष्ट है,कि काई-वर्ग का मान ५.२३१ है जो कि सार्थकता स्तर ०.०५ के लिए सारणी मान ५.६६१ से कम है,अतः काई वर्ग का यह मान सार्थक नहीं है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुए यह कहा जा सकता है, कि शैक्षिक दृष्टि से पिछडे. हुए वर्ग को शिक्षित करने के लिए शिक्षा की जागरूकता से सम्बन्धी रैली निकालने के सम्बन्ध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शून्य परिकल्पनाः- कथन- ''विद्यालय में नामांकन बढ़ाने हेतु समाज में जागरूकता लाने का प्रयास करना'' के प्रति अवलोकित वितरण तथा स्वतंत्र वितरण परिकल्पना के आधार पर बनाये गये प्रत्यासित वितरण की आवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सारणी ४.२ से स्पष्ट है,कि काई-वर्ग का मान १. ३०६ है जो कि सार्थकता स्तर ०.०५ के लिए सारणी मान ५.६६१ से कम है,अतः काई वर्ग का यह मान सार्थक नहीं है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुए यह कहा जा सकता है,कि विद्यालय में नामांकन बढ़ाने हेतु समाज में जागरूकता लाने का पप्रास करने के सम्बन्ध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शून्य परिकल्पनाः- कथन- ''साक्षरता से होने वाले लाभ तथा सरकार द्वारा दी जा रही सुविधाओं की जानकारी समाज को देने'' के प्रति अवलोकित वितरण तथा स्वतंत्र वितरण परिकल्पना के आधार पर बनाये गये प्रत्यासित वितरण की आवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सारणी ४.२ से स्पष्ट है,कि काई-वर्ग का मान ०.३६२ है जो कि सार्थकता स्तर ०.०५ के लिए सारणी मान ५.६६१ से कम है, अतः काई वर्ग का यह मान सार्थक नहीं है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को

स्वीकार करते हुए यह कहा जा सकता है, कि साक्षरता से होने वाले लाभ तथा सरकार द्वारा दी जा रही सुविधाओं की जानकारी समाज को देना के सम्बन्ध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक एव ंअशासकीय प्राथमिक विद्यालय मेअध्यापनरत शिक्षक के दृष्टिकोण मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शून्य परिकल्पनाः- कथन- ''क्षेत्र में हो रहे साक्षरता उन्मलून कार्यक्रम में सहयोग प्रदान करना'' के प्रति अवलोकित वितरण तथा स्वतंत्र वितरण परिकल्पना के आधार पर बनाये गये प्रत्यासित वितरण की आवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सारणी ४.२ से स्पष्ट है, कि काई-वर्ग का मान ६.५३२ है जो कि सार्थकता स्तर ०.०५ के लिए सारणी मान ५.६६१ से अधिक है,अतः काई वर्ग का यह मान सार्थक है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुएयह कहा जा सकता है,कि क्षेत्र मे हो रहे साक्षरता उन्मलून कार्यक्रम में सहयोग पद्रान करने के सम्बन्ध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक के दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर है।

शून्य परिकल्पनाः- कथन- ''समाज के प्रति एक शिक्षक के दायित्वों का निर्वहन करना'' के प्रति अवलोकित वितरण तथा स्वतंत्र वितरण परिकल्पना के आधार पर बनाये गये प्रत्यासित वितरण की आवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सारणी ४.२ से स्पष्ट है,कि काई-वर्ग का मान १.०१६ है जो कि सार्थकता स्तर ०.०५ के लिए सारणी मान ५.६६१ से अधिक है, अतः काई वर्ग का यह मान सार्थक नहीं है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुएयह कहा जा सकता है,कि समाज के प्रति एक शिक्षक के दायित्वों का निर्वहन करने के सम्बन्ध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक एवं अशासकीय पाथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शून्य परिकल्पनाः- कथन- **''शिक्षक होने के नाते से समाज की शिक्षा सम्बन्धी** जागरूकता के लिए चलाये गये कार्यक्रमों में भाग लेना'' के प्रति अवलोकित वितरण तथा स्वतत्रं वितरण परिकल्पना के आधार पर बनाये गये प्रत्यासित वितरण की आवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सारणी ४.२ से स्पष्ट है, कि काई-वर्ग का मान ६.८४८ है जो कि सार्थकता स्तर ०.०५ के लिए सारणी मान ५.६६१ से अधिक है,अतः काई वर्ग का यह मान सार्थक है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करते हुए यह कहा जा सकता है,कि शिक्षक होने के नाते से समाज की शिक्षा सम्बन्धी जागरूकता के लिए चलाये गये कार्यक्रमों में भाग लने के सम्बन्ध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय

में अध्यापनरत शिक्षक एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक के दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर है।

सारणी ४.३

आजीविका के प्रति प्रतिबद्धता

शासकीय प्राथमिक विद्यालय				अशासकीय प्राथमिक विद्यालय				
कथन	**हाँ**	**कभी कभी**	**नही**	**हाँ**	**कभी कभी**	**नही**	**योग**	काई-वर्ग
शिक्षक होने में गर्व का अनुभव करना	२४	०२	०४	२७	०१	०२	३०	१.१७४
शिक्षा में सुधार के लिए योग्य शिक्षकों की नियुक्ति होना	१६	१२	०२	२८	००	०२	३०	८.७२७
राष्ट्र का निर्माण एक कुशल अध्यापक द्वारा सम्भव	२०	०२	०४	२३	०४	०३	३०	१.०१६
शिक्षण कार्य करते समय आनन्द का अनुभव करना	१६	१४	००	१८	११	०१	३०	१.४७७
अपने छात्रों को उचित निर्देशन प्रदान करना	१८	०८	०४	२८	०१	०१	३०	५.२६
साथी शिक्षकों के प्रति सहयोगात्मक	२०	०८	०६	२०	०६	०४	३०	.३८२

शून्य परिकल्पनाः- कथन- शिक्षक होने में गर्व का अनुभव करना" के प्रति सारणी ४.३ से स्पष्ट है, कि काई-वर्ग का मान १.१७४ है जो कि सार्थकता स्तर ०.०५ के लिए सारणी मान ५.९९१ से कम है, अतः काई वर्ग का यह मान सार्थक नहीं है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुएयह कहा जा सकता है, कि शिक्षक होने में गर्व का अनुभव करने के सम्बन्ध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालय मेअध्यापनरत शिक्षक के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शून्य परिकल्पनाः- कथन- "शिक्षा में सुधार के लिए योग्य शिक्षकों की नियुक्ति होना" के प्रति अवलोकित वितरण तथा स्वतंत्र वितरण परिकल्पना के आधार पर बनाये गये प्रत्यासित वितरण की आवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सारणी ४.३ से स्पष्ट है,कि काई-वर्ग का मान ८.७२७ है,जो कि सार्थकता स्तर ०.०५ के लिए सारणी मान ५.९९१ से अधिक है, अतः काई वर्ग का यह मान सार्थक है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करते हुए यह कहा जा सकता है, कि शिक्षा में सुधार के लिए योग्य शिक्षकों की नियुक्ति होने के सम्बन्ध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक के दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर है।

शून्य परिकल्पनाः- कथन- ''राष्ट्र का निर्माण एक कौल अध्यापक द्वारा सम्भव'' के प्रति अवलोकित वितरण तथा स्वतंत्र वितरण परिकल्पना के आधार पर बनाये गये प्रत्यासित वितरण की आवृत्ति में कोइ सार्थक अन्तर नहीं है। सारणी ४.३ से स्पष्ट है, कि काई-वर्ग का मान १.०१६ है जो कि सार्थकता स्तर ०.०५ के लिए सारणी मान ५.९९१ से कम है,अतः काई वर्ग का यह मान सार्थक नहीं है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुएयह कहा जा सकता है,कि राष्ट्र का निर्माण एक कुशल अध्यापक द्वारा सम्भव के सम्बन्ध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शून्य परिकल्पनाः- कथन- शिक्षण कार्य करते समय आनन्द का अनुभव करना'' के प्रति अवलोकित वितरण तथा स्वतंत्र वितरण परिकल्पना के आधार पर बनाये गये प्रत्यासित वितरण की आवृत्ति में कोइ सार्थक अन्तर नहीं है। सारणी ४.३ से स्पष्ट है, कि काई-वर्ग का मान १.४७७ है, जो कि सार्थकता स्तर ०.०५ के लिए सारणी मान ५.९९१ से कम है,अतः काई वर्ग का यह मान सार्थक नहीं है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुए यह कहा जा सकता है,कि शिक्षण कार्य करते समय आनन्द का अनुभव करने के सम्बन्ध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक एव ंअशासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शून्य परिकल्पनाः- कथन- ''अपने छात्रों को उचित निर्दैान प्रदान करना'' के प्रति अवलोकित वितरण तथा स्वतत्रं वितरण परिकल्पना के आधार पर बनाये गये प्रत्यासित वितरण की आवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सारणी ४.३ से स्पष्ट है,कि काई-वर्ग का मान ५.२६ है जो कि सार्थकता स्तर ०.०५ के लिए सारणी मान ५.९९१ से कम है,अतः काई वर्ग का यह मान सार्थक नहीं है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुएयह कहा जा सकता है, कि अपने छात्रों को उचित निर्देशन पद्रान करने के सम्बन्ध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शून्य परिकल्पनाः- कथन- ''साथी ैाक्षिकों के प्रति सहयोग'' के प्रति अवलोकित वितरण तथा स्वतत्रं वितरण परिकल्पना के आधार पर बनाये गये प्रत्यासित वितरण की आवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सारणी ४.३ से स्पष्ट हैं, कि काई-वर्ग का मान ०.३८२ है जो कि सार्थकता स्तर ०.०५ के लिए सारणी मान ५.९९१ से कम हैं, अतः काई वर्ग का यह मान सार्थक नहीं है। इस असार्थक काई-वर्ग के

आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुए यह कहा जा सकता हैं,कि अध्यापन के दौरान साथी शिक्षकों के प्रति सहयोगात्मक के सम्बन्ध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक एव ंअशासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी ४.४

आजीविका के प्रति क्रियाकलाप की प्राप्ति सम्बन्धी प्रतिबद्धता

शासकीय प्राथमिक विद्यालय				अशासकीय प्राथमिक विद्यालय				
कथन	हाँ	कभी कभी	नही	हाँ	कभी कभी	नही	योग	काई-वर्ग
विद्यार्थियों के स्तरानुकलू विषयवस्तु का प्रयोग करना	२०	०४	०६	१५	०३	१२	३०	२.८५६
व्यवसाय के नियमों एव ंदायित्वों का इर्मानदारी से निर्वहन करना	३०	००	००	२७	०२	०१	३०	३.१५८
शिक्षण को रूचिकर बनाने के लिए रोचक अधिगम उपागमों का प्रयोग करना	२०	०८	०२	१६	०६	०३	३०	०.२८२
शिक्षण बिन्दुओं को ध्यान मे रखकर शिक्षण करना	१८	१०	०२	२०	१०	००	३०	७.७२
कार्य गोष्ठियों (सेंमिनार) में भाग लनेा	४	१०	१६	७	०६	१७	३०	१.७११
विद्यालय के खाली समय मे पुस्तकालय जाना	१४	१२	०८	२	४	२४	३०	२१.३

शून्य परिकल्पनाः- कथन- ''विद्यार्थियों के स्तरानुकूल विषय वस्तु का प्रयोग करना'' के प्रति अवलोकित वितरण तथा स्वतंत्र वितरण परिकल्पना के आधार पर बनाये गये प्रत्यासित वितरण की आवृत्ति में कोइ सार्थक अन्तर नहीं है। सारणी ४.४ से स्पष्ट हैै, कि काई-वर्ग का मान २.८५६ है जो कि सार्थकता स्तर ०.०५ केलिए सारणी मान ५.९९१ से कम हैै, अतः काई वग ंका यह मान सार्थक नहीं है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुएयह कहा जा सकता हैै, कि विद्यार्थियों के स्तरानकूल विषयवस्तु का प्रयोग करने के सम्बन्ध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक एव ं अशासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शून्य परिकल्पनाः- कथन- ''व्यवसाय के नियमों एवं दायित्वों का ईमानदारी से निर्वहन करना'' के प्रति अवलोकित वितरण तथा स्वतंत्र वितरण परिकल्पना के आधार पर बनाये गये प्रत्यासित वितरण की आवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सारणी ४.४ से स्पष्ट है, कि काई-वर्ग का मान ३.१५६ है जो कि सार्थकता स्तर ०.०५ के लिए सारणी मान ५.९९१ से कम है, अतः काई वर्ग का यह मान सार्थक

नहीं है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुए यह कहा जा सकता है, कि व्यवसाय के नियमों एवं दायित्वों का ईमानदारी से निर्वहन करने के सम्बन्ध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक केदृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शून्य परिकल्पनाः- कथन- ''शिक्षण को रूचिकर बनाने के लिए रोचक अधिगम उपागमों का प्रयोग करना'' के प्रति अवलोकित वितरण तथा स्वतंत्र वितरण परिकल्पना के आधार पर बनाये गये प्रत्यासित वितरण की आवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।सारणी ४.२१ से स्पष्ट है, कि काई-वर्ग का मान २. २८२ है जो कि सार्थकता स्तर ०.०५ के लिए सारणी मान ५.९९१ से कम है, अतः काई वर्ग का यह मान सार्थक नहीं है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुए यह कहा जा सकता है, कि अध्यापन के दौरान शिक्षण को रूचिकर बनाने के लिए रोचक अधिगम उपागमों का प्रयोग करने के सम्बन्ध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक एव ंअशासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शून्य परिकल्पनाः- कथन- ''शिक्षण बिन्दुओं को ध्यान में रखकर शिक्षण करना'' के प्रति अवलोकित वितरण तथा स्वतंत्र वितरण परिकल्पना के आधार पर बनाये गये प्रत्यासित वितरण की आवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सारणी ४.४ से स्पष्ट है, कि काई-वर्ग का मान ७.७२ है जो कि सार्थकता स्तर ०.०५ के लिए सारणी मान ५.९९१ से अधिक है, अतः काई वर्ग का यह मान सार्थक है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करते हुएयह कहा जा सकता है, कि शिक्षण बिन्दुओं को ध्यान में रखकर शिक्षण करने के सम्बन्ध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक के दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर है।

शून्य परिकल्पनाः- कथन- ''कार्य गोष्ठियों (सेमिनार) में भाग लेना'' के प्रति अवलोकित वितरण तथा स्वतत्रं वितरण परिकल्पना के आधार पर बनाये गये प्रत्यासित वितरण की आवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सारणी ४.२३ से स्पष्ट है, कि काई-वर्ग का मान १.७११ है जो कि सार्थकता स्तर ०.०५ के लिए सारणी मान ५.९९१ से कम है, अतः काई वर्ग का यह मान सार्थक नहीं है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुए यह कहा जा सकता है,कि कार्य गोष्ठियों (सेमिनार) में भाग लेने के सम्बन्ध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालय मेअध्यापनरत शिक्षक केदृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शून्य परिकल्पनाः- कथन- "विद्यालय के खाली समय में पुस्तकालय जाना" के प्रति अवलोकित वितरण तथा स्वतंत्र वितरण परिकल्पना के आधार पर बनाये गये प्रत्यासित वितरण की आवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सारणी ४.२४ से स्पष्ट है,कि काई-वर्ग का मान २१.३ है जो कि सार्थकता स्तर ०.०५ के लिए सारणी मान ५.९९१ से अधिक है,अतः काई वर्ग का यह मान सार्थक है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करते हुए यह कहा जा सकता है,कि अध्यापन के दौरान विद्यालय के खाली समय में पुस्तकालय जाने के सम्बन्ध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक एव ंअशासकीय प्राथमिक विद्यालय मेअध्यापनरत शिक्षक केदृष्टिकोण में सार्थक अन्तर है।

सारणी ४.५

मलूभूत मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता

शासकीय प्राथमिक विद्यालय				अशासकीय प्राथमिक विद्यालय				
कथन	**हाँ**	**कभी कभी**	**नही**	**हाँ**	**कभी कभी**	**नही**	**योग**	काई-वर्ग
विद्यालय में बाल सभा का आयोजन करना	१४	१६	००	१७	११	०२	३०	३.२८४
विद्यार्थियों को नैतिक मूल्यों से सम्बन्धित ज्ञान पद्रान करना	२०	०८	०२	२६	०४	००	३०	४.११४
कक्षा में जातिवाद को महत्व देना	००	००	३०	०१	०२	२७	३०	३.१३
विद्यालय में विद्यार्थियों को पर्यावरण सरंक्षण के बारे में जानकारी प्रदान करना	१४	१४	०२	१५	१३	०२	३०	०४.२२
विद्यार्थियों को विभिन्न महापुरूषों की जीवनी के बारे में कक्षा मे चर्चा करना	०३	१४	१३	१४	१२	०४	३०	९.३७२

शून्य परिकल्पनाः- कथन- "विद्यालय में बाल सभा का आयोजन करना" के प्रति अवलोकित वितरण तथा स्वतत्रं वितरण परिकल्पना के आधार पर बनाये गये प्रत्यासित वितरण की आवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सारणी ४.५ से स्पष्ट है, कि काई-वर्ग का मान ३.२८९ है जो कि सार्थकता स्तर ०.०५ के लिए सारणी मान ५.९९१ से कम है,अतः काई वर्ग का यह मान सार्थक नहीं है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुए यह कहा जा सकता है, कि विद्यालय में बाल सभा का आयोजन करने के सम्बन्ध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक एव ंअशासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।

शून्य परिकल्पनाः- कथन- "विद्यार्थियों को नैतिक मल्यों से सम्बन्धित ज्ञान प्रदान करना" के प्रति अवलोकित वितरण तथा स्वतंत्र वितरण परिकल्पना के आधार पर बनाये गये प्रत्यासित वितरण की

आवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सारणी ४.५ से स्पष्ट है,कि काई-वर्ग का मान १.११४ है जो कि सार्थकता स्तर ०.०५ के लिए सारणी मान ५.९९१ से कम है,अतः काई वर्ग का यह मान सार्थक नहीं है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुए यह कहा जा सकता है,कि विद्यार्थियों को नैतिक मूल्यों से सम्बन्धित ज्ञान प्रदान करने के सम्बन्ध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शून्य परिकल्पनाः- कथन- ''कक्षा में जातिवाद को महत्व देना'' के प्रति अवलोकित वितरण तथा स्वतंत्र वितरण परिकल्पना के आधार पर बनाये गये प्रत्यासित वितरण की आवृत्ति मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सारणी ४.५ से स्पष्ट है,कि काई-वर्ग का मान ३.१३ है जो कि सार्थकता स्तर ०.०५ के लिए सारणी मान ५.९९१ से कम है,अतः काई वर्ग का यह मान सार्थक नहीं है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुए यह कहा जा सकता है, कि अध्यापन के दौरान कक्षा में जातिवाद को महत्व दने के सम्बन्ध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय मे अध्यापनरत शिक्षक एव ंअशासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शून्य परिकल्पनाः- कथन- ''अपनी कक्षा में जातिवाद को महत्व देना'' के प्रति अवलोकित वितरण तथा स्वतत्रं वितरण परिकल्पना के आधार पर बनाये गये प्रत्यासित वितरण की आवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सारणी ४.५ से स्पष्ट है,कि काई-वर्ग का मान २.०६८ है जो कि सार्थकता स्तर ०.०५ के लिए सारणी मान ५.९९१ से कम है,अतः काई वर्ग का यह मान सार्थक नहीं है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुए यह कहा जा सकता है, कि अपनी कक्षा में जातिवाद को महत्व देने के सम्बन्ध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालय मे अध्यापनरत शिक्षक के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शून्य परिकल्पनाः- कथन- ''विद्यालय मे विद्यार्थियों को पर्यावरण सरंक्षण के बारे में जानकारी प्रदान करना'' के प्रति अवलोकित वितरण तथा स्वतंत्र वितरण परिकल्पना केआधार पर बनाये गये प्रत्यासित वितरण की आवृत्ति मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सारणी ४.५ से स्पष्ट है,कि काई-वर्ग का मान ०. ४२२ है जो कि सार्थकता स्तर ०.०५ के लिए सारणी मान ५.९९१ से कम है,अतः काई वर्ग का यह मान सार्थक नहीं है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुए यह कहा जा सकता है,कि विद्यालय में विद्यार्थियों को पर्यावरण सरंक्षण के बारे में जानकारी प्रदान करने के सम्बन्ध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय मे अध्यापनरत शिक्षक एव ंअशासकीय प्राथमिक विद्यालय में

अध्यापनरत शिक्षक के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। **शून्य परिकल्पनाः- कथन- ''विद्यार्थियों को विभिन्न महापुरूषों की जीवनी के बारे में** कक्षा में चर्चा करना'' के प्रति अवलोकित वितरण तथा स्वतंत्र वितरण परिकल्पना के आधार पर बनाये गये प्रत्यासित वितरण की आवृत्ति मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सारणी ४.५ से स्पष्ट है,कि काई-वर्ग का मान ६.३७२ है जो कि सार्थकता स्तर ०.०५ के लिए सारणी मान ५.६६१ से अधिक है,अतः काई वर्ग का यह मान सार्थक है। इस असार्थक काई-वर्ग के आधार पर शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करते हुए यह कहा जा सकता है, है, कि अध्यापन के दौरान विद्यार्थियों को विभिन्न महापुरूषों की जीवनी के बारे में कक्षा में चर्चा करने के सम्बन्ध में शासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक एव ंअशासकीय प्राथमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षक के दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर है।

प्रमुख निष्कर्ष शिक्षकों की शिक्षण प्रतिबद्धता से सम्बन्धित प्रमुख निष्कर्ष निम्न है

- परिणामों के विश्लेषण के पश्चात यह कहा जा सकता है कि लगभग ७५ प्रतिशत शासकीय ८५ प्रतिशत अशासकीय शिक्षकों में शिक्षण के प्रति प्रतिबद्धता पायी गयी और वे विद्यार्थियों पर उचित ध्यान दते हैं, जबकि वे शिक्षण के दौरान विद्यार्थियों का ध्यानाकर्षण करने के लिये कभी-कभी प्रश्न पूछते हैं।
- सर्वेक्षण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि लगभग ५३ प्रतिशत शासकीय एवं ६३.३३ प्रतिशत अशासकीय शिक्षक समय-समय पर परीक्षण को लेते हैं परन्तु व हमेशा प्रतिभावान विद्यार्थियों को प्रोत्साहित नहीं करते है ।
- १०० प्रतिशत शासकीय एवं १०० प्रतिशत अशासकीय शिक्षकों में समाज के प्रति प्रतिबद्धता पायी गयी और वे अपने दायित्वों का निर्वहन ईमानदारी से करते है, परन्तु वे साक्षरता सें होने वाले लाभ तथा सरकार द्वारा दी जा रही सुविधाओं की जानकारी समाज को नहीं दते हैं ।
- सवेर्क्षण के दौरान जब शिक्षकों से यह पूछा गया कि वे शैक्षिक दृष्टि से पिछडे. हुए वर्ग को शिक्षित करने के लिये शिक्षा की जागरूकता से सम्बन्धित या नामांकन बढ़ाने हेतु कोई कार्यक्रम या रैली निकालते है ? तो परिणाम के अनुसार शासकीय शिक्षकों की अपेक्षा अशासकीय शिक्षक अधिक सक्रिय पाये गये।

- ७५ प्रतिशत शासकीय तथा ८० प्रतिशत अशासकीय शिक्षक आजीविका के प्रति प्रतिबद्ध हैं तथा वे शिक्षण कार्य करते समय आनन्द का अनुभव करते हैं एवं अपने छात्रों को उचित निर्देशन पद्रान करते है।

- अधिकांश शासकीय व अशासकीय शिक्षक विद्यार्थियों के स्तरानुकूल विषय वस्तु का प्रयोग करते हैं परन्तु शिक्षण को रूचिकर बनाने के लिए अधिगम उपागमों का प्रयोग नहीं करते हैं। अधिकांश शासकीय व अशासकीय शिक्षक न तो कार्य गोष्टियों में भाग लते हैं और न ही पुस्तकालय जाते हैं।

- सर्वेक्षण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अधिकांश शासकीय एवं अशासकीय शिक्षक विद्यालय में बाल सभा का आयोजन नहीं करते हैं । अशासकीय शिक्षकों की अपेक्षा शासकीय शिक्षक विद्यार्थियों को नैतिक मूल्यों से सम्बन्धित कम ज्ञान पद्रान करते हैं।

- सर्वेक्षण के दौरान यह पाया गया कि अधिकांश शासकीय एव ंअशासकीय शिक्षक नियमित रूप से विद्यालय आते हैं, परन्तु विद्यार्थियों के ज्ञान वृद्धि करने हेतु पर्यावरण सरंक्षण एवं महापुरूषों की जीवनी के बारे में चर्चा नहीं करते है।

सुझाव परिणामों के विश्लेषण के पश्चात परिणामों के आधार पर निम्न सुझाव दिया सकता है।

- सभी विद्यार्थियों पर उचित ध्यान देना चाहिए एवं शिक्षण के दौरान विद्यार्थियों का ध्यानाकर्षण करने के लिए प्रश्न पछूना चाहिए। छात्रकोष का उपयोग विद्यार्थियों के कल्याण के लिए करना चाहिए।

- शिक्षक को अपने क्षेत्र में हो रहे साक्षरता उन्मूलन कार्यक्रम मे अधिक सहयोग पद्रान करना चाहिए। जो दायित्व हैं उनका निवर्हन ईमानदारी से करना चाहिए एवं समाज की शिक्षा सम्बन्धी जागरूकता के लिए चलाये जाने वाले कार्यक्रमों मे भाग लेना चाहिए।

- शिक्षक होने में गर्व का अनुभव करना चाहिए तथा विद्यार्थियों को यह बताना चाहिए कि शिक्षा में सुधार एवं राष्ट्र का निर्माण एक कुशल अध्यापक द्वारा सम्भव है।

- शिक्षण के दौरान सदैव आनन्द का अनुभव करना चाहिए विद्यार्थियों को उचित निर्देशन प्रदान करना चाहिए एवं साथी शिक्षकों के साथ सहयोगात्मक व्यवहार रखना चाहिए। विद्यार्थियों के स्तरानूकुल विषय वस्तु का प्रयोग करना चाहिए तथा शिक्षण को रोचक बनाने के लिए अधिगम उपागमों का प्रयोग करना चाहिए।

- शिक्षक को सदैव कार्यगोष्ठियों (सेमिनार) में भाग लेना चाहिए एवं खाली समय का उपयोग पुस्तकालय में जाकर करना चाहिए इससे ज्ञान में वृद्धि होती है।
- विद्यालय में बालसभा का आयोजन करना चाहिए। विद्यार्थियों को नैतिक मूल्यों से सम्बन्धित पद्रान करना चाहिए। अपने विद्यालय में जातिवाद को महत्व नहीं देना चाहिए।

अन्य महत्वपूर्ण सुझाव

वर्तमान प्रधानमन्त्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी का शिक्षक दिवस पर देश को सम्बोधन का मूल उद्देश्य शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को उनके कर्तव्यों, दायित्वों को बोध कराना था क्योंकि बहुत समय पहले से ऐसा लग रहा है कि शिक्षक अपने कर्तव्यों को भूल गये तथा विद्यार्थी अपने दायित्वों को। अपने समस्त सम्बोधन में प्रधानमन्त्री द्वारा किसी भी कार्य की सफलता के लिए उस कार्य से जुड़े प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सभी सदस्यों एवं देश के विकास से सम्बन्धित कार्यक्रमों को जन आन्दोलन बनाने की बात कही जाती है। ठीक उसी प्रकार अध्यापक शिक्षा में प्रतिबद्धता लाने के लिए एक मुहीम एक जन आन्दोलन चलाने की आवश्यकता है। सोते को जगाने के लिए उसके कर्तव्यों का बोध कराने की आवश्यकता है और इस आन्दोलन में शैक्षिक प्रशासक, अध्यापक, समाज, एवं विद्यार्थी वर्ग को सम्मिलित किया जाए उन्हें उनके कर्तव्यों की शपथ दिलाई जाए और उस शपथ को कानूनी जामा पहनाया जाए उसका पालन न करने की स्थिति में दण्डात्मक कार्यवाही की जाए। हमे इस दिशा में विचार करना होगा और सम्बन्धित सभी के विचारों में परिर्वतन लाने के लिए उनकी मनोस्थिति को जानना होगा। दूसरी तरफ इस प्रतिबद्धता का सम्बन्ध प्रत्येक व्यक्ति एवं उसकी इच्छा पर निर्भर करता है और दूसरे के विचारों को थोपा नहीं जा सकता हमें मॉडल प्रस्तुत करना होगा ताकि दूसरा खुद अपने विचारों एवं कर्तव्यों में परिवर्तन लाने का प्रयास करेगा जो स्थायी होगा। इसके अतिरिक्ति प्रतिबद्धता में होती कमी या गिरावट के कारणों का पता लगाकर उसे दूर करने की आवश्यकता है। कुछ सुझाव इस प्रकार है।

- प्रतिबद्धता में कमी हमेशा व्यक्तिगत कारणों से नहीं होती कुछ सामाजिक एवं आर्थिक कारणों से होती है। हमें उस प्रोफेशन की वास्तविक स्थिति का आकलन कर सकारात्मक दिशा में प्रयास करना चाहिए।
- अध्यापक शिक्षा में कार्यरत शैक्षणिक संस्थाओं को चाहिए कि वे अपने संस्थानों में ऐसे शिक्षकों को तैयार करे जो पूर्ण रूप से अपने कर्तव्यों का पालन करे तथा समाज में एक प्रतिबद्ध शिक्षक के रूप में अपनी पहचान बना सके।

- हमें शिक्षकों के हितो के प्रति समुदाय एवं समाज के विकास को लाना होगा कार्य के लिए अच्छा वातावरण तथा क्रियाओं के सम्पादन एवं नितियों के निर्माण में अध्यापाकों की सहभागिता बढ़ाकर उनके अन्दर प्रतिबद्धता लाने का प्रायस करना चाहिए।
- हमें इस पर विचार करने की आवश्यकता है कि अध्यापकों की प्रतिबद्धता कैसे बढ़ाई जाए। अन्य क्या रणनिति अपनाई जाए जिससे अध्यापकों में प्रतिबद्धता के स्तर को बढ़ाया जाए तथा कार्य के प्रति असंवेदनशीलता की मात्रा में कमी लाई अर्थात संवेदनशीलता बढ़ाने की आवश्यकता है।
- शिक्षकों द्वारा केवल अपने शैक्षणिक कार्यों का सम्पादन कर अपने कर्तव्य को पूरा मान लिया जाता है। हमें उनके कार्यों एवं दायित्वों के प्रति जागरूकता लाने की आवश्यक है।
- मूल्यों के अभाव, एवं कारणों, जवाबदेही की कमी एवं आत्म चेतना में कमी के कारणों का पता लगाया जाए तथा मूल्यों के संरक्षण, जवाबदेही का निर्धारण किया जाए जिससे प्रतिबद्धता में सकारात्मक सुधार लाया जा सके।
- प्रतिबद्धता को मूलतः आत्मा की आवाज एवं आत्म चेतना से जोड़ा जाता है यदि एक शिक्षक को यह एहसास हो कि उसके कर्तव्य क्या है उसके दायित्व क्या है तो उस शिक्षक में प्रतिबद्धता स्वतः निर्मित हो जाती है। हमें उस एहसास को बढ़ाने की आवश्यकता है।
- प्रतिबद्धता क्या है इसका महत्व क्या है इससे सम्बन्धित अनेक प्रकार के व्यक्तिगत एवं सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए तथा स्वयं जागृत होने के साथ-साथ दूसरे को भी जगाने का प्रयास किया जाए।
- पाठ्य सहगामी क्रियाओं का प्रतिबद्धता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है अतः उनका आयोजन विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए किया जाए।
- समस्त शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों ,प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रतिबद्धता के महत्व को बताया जाए तथा पाठ्यक्रम में प्रतिबद्धता को उचित स्थान दिया जाए।
- प्रतिबद्धता पर अच्छी अधिगम सामग्री उपलब्ध कराई जाए जैसे समर्पित अध्यापकों की जीवनी, कहानियां इत्यादि।
- गांव स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक अच्छे शिक्षकों की पहचान की जाए तथा उनको राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जाए।

- शैक्षिक प्रशासकों से यह अपेक्षा की जाए की वे अच्छे शिक्षकों के कार्यों एवे उनके कार्यों की प्रभावकारिता का मूल्यांकन करे तथा उनकी उपलब्धता एवं प्रतिबद्धता के आधार पर नियुक्ति एवं पदोन्नति जैसे कार्यों का सम्पादन किया जाए जिससे प्रतिबद्धता को बढ़ाया जा सकता है।
- प्रतिबद्धता एवं कर्तव्य निर्वहन न करने या आभाव के कारण की खोज की जाए तथा उसके निवारण के लिए तत्काल समस्या समाधान समिति की व्यवस्था की जाए।
- शैक्षिक मामलों से सम्बन्धित निर्णयों समस्याओं एवं कानूनी हस्तक्षेपों, शिक्षकों, विद्यार्थियों के लिए एक अलग से फास्ट ट्रैक न्यायालय की स्थापना की जाए जिसमें केवल शैक्षणिक संस्थानों शिक्षकों एवं विद्यार्थियों से सम्बन्धित शैक्षणिक समस्याओं का विस्तारण किया जाए तथा समाज में एक विश्वास हासिल किया जाए।
- प्रतिबद्धता के लिए जागरूकता, कार्यक्रम कार्यशालाओं एवं संगोष्ठीयों का आयोजन किया जाए। तथा मूल्यों को संरक्षण व बढ़ावा दिया जाए।
- अध्यापक को उनके दायित्वों, कर्तव्यों का बोध कराया जाए तथा इसके प्रति उनमें जागरूकता लाई जाए। प्रतिबद्धता से सम्बन्धित अभ्यास कार्य पाठ्य क्रम में लाया जाए।
- शैक्षणिक प्रक्रिया के सम्पादन, प्रबन्ध एवं पाठ्यक्रम के विकास में शिक्षकों की भूमिका दी जाए जिससे उनकी जवाबदेही का निर्धारण किया जाए तथा उनकी उपलब्धि का आंकलन किया जाए।
- शिक्षकों को नवीन शोध एवं बौद्धिक रूप से वृद्धि करने के लिए अकादमिक स्वतन्त्रता दी जाए तथा इनके कार्यों में प्रशासनिक हस्तक्षेप को रोका जाए।
- अध्यापक चयन की प्रक्रिया में सुधार की जाए तथा अन्य चयन में प्रतिबद्धता निर्धारण के लिए जवाबदेही निर्धारित की जाए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

कुमार ललित (२०१२); शिक्षक शिक्षा एवं गुणात्मक सुधार, भारतीय आधुनिक शिक्षा जनवरी २०१० वर्ष ३२ अंक ३ राष्ट्रीय अध्यायापक शिक्षा परिषद, पृष्ठ १७-२८

श्रीवास्तव राजेश (२०१२); जनजातीय शिक्षा में शिक्षकों की भूमिका भारतीय आधुनिक शिक्षा वर्ष ३२ अंक ४, अप्रैल २०१२, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंस्थान एवं प्रशिक्षण परिषद पृष्ठ १६-२५

जोशी सुषमा (२०१२); शान्ति शिक्षा एवं वर्तमान अध्यापक शिक्षा में निहितार्थ भारतीय आधुनिक शिक्षा वर्ष ३२ अंक ३ राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद पृष्ठ ६२-६५

श्रीवास्तव रश्मि (२०१२); शिक्षक दिवस के प्रति हमारी प्रतिबद्धता भारतीय आधुनिक शिक्षा वर्ष ३३ अंक १, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद पृष्ठ ५०-६०

बंधोपाध्याय, अनु (२००६); शिक्षक भारतीय आधुनिक शिक्षा जूलाई-अक्तूबर संयुक्तांक वर्ष २५ अंक १-२, एनɛसीɛईɛ आर टीɛ पृष्ठ १-५

सभ्रवाल शोभासी (२००६); गुरू शिष्य सम्बन्ध आधुनिक शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में, भारतीय आधुनिक शिक्षा वर्ष ३० अंक २ पृष्ठ ३७-४०

यादव सतिश (२००६); अध्यापक शिक्षा समस्याएं एवं चुनौतियां भारतीय आधुनिक शिक्षा वर्ष ३० अंक २ पृष्ठ ७६-८५

करन डिकर सुमन (२००३); स्ट्रगल फॉर कमीटमेन्ट, टीचर कमीटमेन्ट, वालिया के एनɛसीɛईɛआरɛटीɛ पृष्ठ ६४-१०५

त्रिपाठी एस एन (२००३); वैल्यू एजुकेशन टीचर कमीटमेन्ट, टीचर कमीटमेन्ट वालिया के एनɛसीɛईɛआरɛटीɛ पृष्ठ ५७-३६

देश पाण्डेय वी एसɛ (२००३); कैन कमीटमेन्ट वी लर्न पृष्ठ २८-३८ आरɛ टीɛ वालिया के (२००३) टीचर कमीटमेन्ट एन सीɛ आर टीɛ

कुमार (२००४); प्रारम्भिक शिक्षा के भावी शिक्षकों की शिक्षक अभिवृत्तियों तथा शिक्षण व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता एवं समर्पण स्तर का अध्ययन।